हिंदु-मुसलमाँ हो रहा है

आज
हिंदोस्ताँ रो रहा है।

दीवारें सुदृढ़ नहीं,
लोगों के अंत:करण की।
उड़ रही ये कैसी,
आंधियाँ धर्मांतरण की।
सर्वत्र
हिंदु-मुसलमाँ हो रहा है।

राजनीति के चुल्हे की,
आग भभक रही है।
तीव्र आँच में स्वार्थ की,
खीर पक रही है।
ईमान
कुर्बा हो रहा है।

पंचवटी में वैदेही को,
फिर ताके लंकेश।
दु:शासन के हाथों में,
फिर पांचाली के केश।
नारी-स्वाभिमान
परेशाँ हो रहा है।

आज
हिंदोस्ताँ रो रहा है।

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'
व्याख्याता (अंग्रेजी)
घोटिया-बालोद (छत्तीसगढ़)

टीकेश्वर सिन्हा ' गब्दीवाला'

---//---